
CBSE Class 12 हिंदी ऐच्छिक

पुनरावृत्ति नोट्स

पाठ-17

(क) शेर

कथा-परिचय

‘शेर’ असगर वजाहत की प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघुकथा है। शेर व्यवस्था का प्रतीक है। जंगल के जानवर सामान्य जनता के प्रतीक हैं। शेर के पेट में जंगल के सभी जानवर किसी न किसी लालच में समाते जा रहे हैं। व्यवस्था भी किसी न किसी प्रकार सभी को अपने जाल में फँसा लेती है।

स्मरणीय बिन्दु

- आदमी सत्ता के जाल से बचने के लिए जंगल में जाता है किंतु वहाँ भी सत्ता का प्रतीक शेर विद्यमान है। सभी जानवर किसी न किसी प्रलोभन के कारण शेर के मुख में समाते जा रहे हैं।
- गधे को यह प्रलोभन दिया गया है कि शेर के मुँह में घास का मैदान है, लोमड़ी को यह बताया गया है कि वहाँ रोजगार का दफ्तर है तथा कुत्तों से यह कहा गया है कि शेर के मुँह में प्रवेश करना ही निर्वाण का एकमात्र मार्ग है।
- लेखक सच्चाई का पता लगाने के लिए शेर के कार्यालय जाता है। जिस प्रकार सत्ता के पक्षधर सत्ता का गुणगान करते हैं उसी प्रकार कार्यालय के कर्मचारी शेर की तरफदारी करते हैं। लेखक उनसे शेर के मुँह में रोजगार के दफ्तर होने की असलियत पूछने तथा उसका सबूत माँगने पर वे कहते हैं कि - ‘मानव जीवन में प्रमाण से अधिक विश्वास महत्वपूर्ण है।’ लेखक कहता है कि जितने भी ठग और मक्कार लोग होते हैं वे अपनी बात का कोई प्रमाण नहीं दे सकते क्योंकि वे झूठे होते हैं। इसलिए वे लोगों से बिना सबूत दिए, केवल ऐसे ही विश्वास करने का आग्रह करते हैं। जब लोग इन पर विश्वास करने लगते हैं तो वे उनके विश्वास का अनुचित लाभ उठाते हैं। शेर के आफिस के कर्मचारी भी यही कर रहे हैं।
- शेर का मुँह तथा रोजगार के दफ्तर के बीच यह अन्तर है कि शेर का मुँह तो मात्रा एक छलावा है। रोजगार का दफ्तर रोजगार प्राप्ति का एक माध्यम है। शेर के मुँह में जाने से लोगों को धेखा मिलता है जबकि रोजगार दफ्तर के माध्यम से लोगों को रोजगार मिलता है।

(ख) पहचान

कथा परिचय

पहचान के माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि राजा को अंधी, बहरी और गूँगी प्रजा पसंद होती है जो बिना कुछ देखे, सुने और बोले राजा के आदेशों का पालन करती रहे।

स्मरणीय बिंदु

- राजा देश शान्ति, उत्पादन और तरक्की का हवाला देते हुए आँखें, कान और मुँह बंद करने के आदेश देता है। परन्तु
-

वास्तव में उसका उद्देश्य था कि लोग राजा के निरंकुश एवं स्वार्थपूर्ण कार्यों को न देख सकें। वे किसी की बातें सुनकर सत्ता का विरोध न कर सकें तथा राजा के विरुद्ध आवाज न उठाएँ।

- यदि जनता राज्य की स्थिति को अनदेखा करती है, उसकी ओर ध्यान नहीं देती तो शासक वर्ग निरंकुश हो जाता है। शासक की व्यक्तिगत उन्नति तो खूब होती है परन्तु राज्य की प्रगति रुक जाती है। यदि राज्य की जनता, राज्य की स्थिति के प्रति सचेत नहीं रहती है तो शासक वर्ग राज्य के संसाधनों का प्रयोग अपने व्यक्तिगत हित के लिए करता है तथा राज्य की स्थिति में सुधार और विकास में उसकी कोई रुचि नहीं होती है।
- खैराती, रामू और छिद्रू जागरूक एवं सचेत जनता के प्रतीक हैं। राजा के आदेश पर आँखें बंद करके वे भी सामान्य जनता के समान हो गए। कुछ समय बाद राज्य की प्रगति देखाने की इच्छा से उन्होंने जब आँखें खोली तो उन्हें सर्वत्र सत्ता की शक्ति ही दिखाई दी। उन्हें सामने केवल राजा ही दिखाई दिया, प्रजा वहाँ नहीं थी। चारों ओर सत्ता का ही प्रभुत्व था, जनता का कोई अस्तित्व नहीं था। सत्ता इतनी शक्तिशाली हो चुकी थी कि बदलाव की कोई गुंजाइश नहीं थी।

(ग) चार हाथ

कथा-परिचय

- ‘चार हाथ’ पूंजीपतियों द्वारा मजदूरों के शोषण से उजागर करती है। पूंजीपति अपने लाभ में वृद्धि के नए-नए तरीके अपनाते हैं। वह अपने लाभ के लिए मजदूरों का शोषण करता है और कई बार उनके स्वाभिमान को भी ठेस पहुँचाता है। मजदूर अपनी निर्धनता और मजबूरी के कारण विरोध की स्थिति में नहीं होते हैं। मजदूर विवशता के कारण आधी मजदूरी में भी काम करने को राजी हो जाते हैं।

स्मरणीय बिन्दु

- एक मिल मालिक ने अपना मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए, मिल के मजदूरों को चार हाथ लगाने की योजना बनाई। इस काम में वैज्ञानिकों का शोध असफल होने पर उसने यह कार्य स्वयं करने का निश्चय किया।
- मिल मालिक ने कटे हुए हाथ मजदूरों के फिट करने चाहे पर वह असफल रहा। फिर उसने लकड़ी तथा उसके बाद लोहे के हाथ फिट करने चाहे, परन्तु इस प्रयास में बहुत से मजदूर मर गए।
- चार हाथ न लग पाने की स्थिति में मिल मालिक की समझ में यह बात आयी कि मजदूरों का वेतन आध कर दो और दुगुने मजदूर काम पर रख लो तो मुनाफ़ा वैसे ही दुगुना हो जाएगा। यह कार्य भी मजदूरों के चार हाथ लगाने जैसा ही होगा।

(घ) साझा

कथा-परिचय

उद्योगों पर कब्जा जमाने के बाद पूंजीपतियों की नजर किसानों की जमीन और उत्पाद पर जमी है। गाँव का प्रभुत्वशाली वर्ग भी पूंजीपतियों का सहयोग करता है। वह किसान को साझा खेती करने का झाँसा देता है और उसकी सारी पफसल हड़प लेता है।

स्मरणीय बिन्दु

- 'हाथी' जो कि पूँजीपति वर्ग का प्रतीक है, उसने किसान के समक्ष साझे की खेती का प्रस्ताव रखा। किसान ने इंकार कर दिया क्योंकि साझे की खेती के विषय में उसके कटु अनुभव थे। साझे की खेती से उसका भरण-पोषण नहीं होता है, अकेले खेती करने में उसको डर लगता है इसलिए अब वह खेती करना नहीं चाहता है।
- हाथी अपनी बातों में फँसाकर उसे खेती के लिए राजी कर लिया तथा फसल के बँटवारे के समय किसान की सारी फसल हड़प ली।